

Soma gab den Frauen Glanz, der Gandharva gab ihnen eine schöne Stimme, Agni allgemeine Reinheit; deshalb sind die Frauen rein.

सोमस्तासौ ददौ शौचं s. den vorangehenden Spruch.

स्तनौ मांसग्रन्थी कनककलशावित्युपमितां मुखं श्लेष्मागारं तदपि च शशाङ्केन तुलितम् ।
स्रवन्मूत्रक्षित्तिन्नं करिवरकरस्पर्धि जघनं मुङ्गुर्निन्ध्यं रूपं कविजनविशेषैर्गुरु कृतम् ॥ ३२९७ ॥

T^o [ἀέ] ἐπίπορον σῶμα τῶν γυναικῶν ἐπαινεῖται ἐν τοῖς ποιήμασι τῶν ποιητῶν (genauer ὑπὸ ἐνδόξων ποιητῶν). οἱ μὲν γὰρ μαῖοι, οἱ ὄντες οἰδήματα ἐκ κρέατος, συγκρίνονται δὺο χρυσοῖς λαγηνίοις. τὸ δὲ πρόσωπον, τὸ ἐν πλήρεος φλέγματος καὶ κορύζης καὶ λήμης, παραβάλλεται τῇ Σελήνῃ. ὁ δὲ μῆρὸς, ὁ ὢν κατὰ βροχὸς ἐκ τοῦ ῥέοντος οὖρου, ὁμοιοῦται τῇ Galanos.

स्तब्धस्य नश्यति यशो विषमस्य मैत्री नष्टेन्द्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः ।

विद्याफलं व्यसनिनः कृपास्य सौख्यं राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥ ३२९८ ॥

Dem Stumpfen geht der Ruhm verloren, dem Launenhaften die Freundschaft, dem Unvermögenden die Familie, dem Geldgierigen die Tugend, dem Lasterhaften die Frucht des Wissens, dem Geizigen das Wohlbehagen, dem von fahrlässigen Ministern umgebenen Fürsten die Herrschaft.

स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम् ।

अहो मुसदशी वृत्तिस्तुलाकोटेः खलस्य च ॥ ३२९९ ॥

O wie ähnlich ist doch das Benehmen des Endes des Wagebalkens und das des Bösewichts: durch ein Weniges steigen sie in die Höhe, durch ein Weniges sinken sie hinab.

स्त्रियं हि यः प्रार्थयते संनिकर्षं च गच्छति ।

इषञ्च कुरुते सेवां तमेवेच्छति योषितः ॥ ३३०० ॥

Wer eines Weibes begehrt, an sie herantritt und ihr nur einige Höflichkeit erzeigt, nach dem verlangen die Frauen.

स्त्रियः पूर्वं सुैर्भुक्ताः सोमगन्धर्ववक्त्रिभिः ।

भुञ्जते मानुषाः पश्चात्तस्मादेषो न विद्यते ॥ ३३०१ ॥

3297) BHARTR. 3, 17 BOHL. 15 HABB. 16 lith.

Ausg. I und GALAN. 19 lith. Ausg. II. ÇĀRṆG.

PADDH. a. कनककलश. c. शिर st. कर. d. वर st. जन.

3298) VĀNARĀSHṬAKA 3 bei HABB. 244. in NĪTISAṆK. 42. PAṆKĀT. III, 245. HIT. II, 104.

a. लुब्धस्य st. स्तब्धस्य und पिशुनस्य (mit vorangehendem यशः) st. विषमस्य PAṆKĀT.

b. नष्टक्रियस्य st. नष्टेन्द्रियस्य. c. मूर्खस्य च

st. विद्याफलं, वृत्तं st. सौख्यं VĀN. d. निकर-स्य st. सचिवस्य.

3299) PAṆKĀT. I, 166. ed. orn. 119. KĀV-JAPR. 132. SĀH. D. 265. ÇĀRṆG. PADDH. b. आ-प्नोति st. आयाति. c. नु st. मु, चेष्टा तुलायष्टेः st. वृत्तिस्तु PAṆKĀT.

3300) MBH. 13, 2216. PAṆKĀT. I, 157. a. च st. हि PAṆKĀT.

3301) PAṆKĀT. III, 211. Vgl. RV. 10, 83,